

अमृतमहोत्सवग्रन्थमाला-05



संस्कृतशिक्षणस्य द्वितीयं पुस्तकम्

संस्कृतशिक्षणदीपिका

(सरलमानकसंस्कृतेन लिखिता)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

कुलपतिः

लेखकः

प्रो. कुलदीपशर्मा

आचार्यः, शिक्षाशास्त्रविद्याशाखा

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

संस्कृतम्
विद्यालयः



केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

संसदः अधिनियमेन स्थापितः

नवदेहली-110058

पठत संस्कृतम्
वदत संस्कृतम्

संस्कृतशिक्षणदीपिका

संस्कृतशिक्षणाय राष्ट्रीयशिक्षानीति: - 2020 इत्यस्याः दिशानिर्देशे
भारतीयज्ञानपरम्परायाः च आलोके सरलमानकसंस्कृतेन लिखिता
व्यावहारिकी क्रियात्मिका च
कक्षान्तःप्रवेशिका

प्रधानसम्पादकः

श्रीनिवासः वरखेडी

कुलपतिः

लेखकः

प्रो. कुलदीपशर्मा

आचार्यः, शिक्षाशास्त्रविद्याशाखा

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली



केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

संसदः अधिनियमेन स्थापितः

नवदेहली

प्रकाशकः

कुलसचिवः

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

संसदः अधिनियमेन स्थापितः

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,

नवदेहली-110058

ईपीएबीएक्स : 28524993, 28521994, 28524995

ई मेल : res-pub@csu.co.in

वेबसाईट : www.sanskrit.nic.in

© केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

प्रथमं संस्करणम् : 2022

ISBN : 978-93-85791-54-3

मूल्यम् : ₹ 240.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिंटर्स

97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007

शब्दद्वयम्

संस्कृतशिक्षणभूमिका इति पुस्तकस्य अनुवर्तनरूपः अस्ति अयं द्वितीयः 'संस्कृतशिक्षणदीपिका' नामकः ग्रन्थः। अस्मिन् ग्रन्थे संस्कृतशिक्षणसम्बद्धाः बहवः विषयाः इतोऽपि विस्तृततया चर्चिताः सन्ति।

प्रथमायाम् अन्वितौ संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि विस्तरेण निरूपितानि सन्ति। न केवलं तावत्, अग्रे संस्कृतशिक्षणे गुणवत्तावर्धनं कथम् इत्यपि विचारः प्रस्तुतः अस्ति। भाषाशिक्षणसिद्धान्ताः सुष्ठु परिशीलिताः सन्ति। विशिष्य दश शिक्षणसूत्राणि अत्र चित्ररूपेण दर्शितानि सन्ति। अग्रे तेषां विस्तरेण विवरणम् अपि कृतम् अस्ति। संस्कृतशिक्षणस्य सर्वेऽपि विधयः अत्र निरूपिताः सन्ति। ग्रन्थे चित्राणि तत्र तत्र प्रयुक्तानि सन्ति। गद्य-पद्य-नाटक-व्याकरणादिशिक्षणं कथं भवेदिति चिन्तनाय पृथक् पृथगेव अध्यायः कल्पितः अस्ति, यत्र सः विषयः विस्तरेण चर्चितः अस्ति।

शिक्षाशास्त्रदृष्ट्या यत् अत्यन्तं प्रामुख्यम् आवहति तत् मूल्याङ्कनं प्रश्नपत्रनिर्माणम् - इत्यादिकम् अत्र सम्यक् विवरणपूर्वकं निरूपितम् अस्ति। समग्रे ग्रन्थे सरलमानकसंस्कृतस्य उपयोगः कृतः अस्ति। शिक्षाशास्त्रसम्बद्धाः विषयाः प्रायः सर्वेऽपि अत्र सन्ति इत्यतः शिक्षाशास्त्रिकक्षयायाम् अधीयानानां छात्राणां महते लाभाय कल्पेत एषः ग्रन्थः।

- डॉ. एच्. आर्. विश्वासः

अनुक्रमणिका

अन्विति:-१

| | |
|--|-------|
| १. संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १-१४ |
| लक्ष्ये उद्देश्ये च भेदः | ३ |
| शिक्षणोद्देश्यानां ब्लूम-वर्गीकरणम् | ३ |
| संस्कृतशिक्षणे उद्देश्यनिर्धारणम् | ७ |
| वर्तमानसंस्कृतशिक्षातन्त्रस्य पृष्ठभूमिः | ७ |
| परम्परागतधारा | ८ |
| आधुनिकधारा | ८ |
| परम्परागतधारा, आधुनिकधारा, आधुनिकधारायां प्राथमिकस्तरे संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि | ११ |
| आधुनिकधारायां माध्यमिकस्तरे अनिवार्यसंस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि | ११ |
| आधुनिकधारायां माध्यमिकस्तरे वैकल्पिकसंस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि | ११ |
| आधुनिकधारायाम् उच्चस्तरे संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि ... | १२ |
| परम्परागतधारायां प्राथमिकस्तरे संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १२ |
| परम्परागतधारायां माध्यमिकस्तरे संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १२ |
| परम्परागतधारायाम् उच्चस्तरे संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि .. | १२ |
| २. संस्कृतशिक्षणस्य गुणवत्तावर्धनम् | १५-२३ |
| आङ्ग्लभाषया सङ्केताक्षरैः Quality इति शब्दे विचारः ... | १६ |
| गुणवत्तायां भारतीयदृष्टिः | १७ |

| | |
|---|----|
| संस्कृतकक्षायां गुणवत्तासंवर्धनम् | १७ |
| संस्कृतशिक्षाव्यवस्थायां गुणवत्तास्थानानि | १८ |
| कक्षायाः पूर्वक्रियाः | १९ |
| कक्षायाः अन्तःक्रियाः | १९ |
| कक्षायाः उत्तरक्रियाः | २० |
| गुणवत्तायै शिक्षकस्य प्रौद्योगिकीज्ञानम् | २१ |
| शैक्षिकप्रबन्धनदृष्ट्या गुणवत्तायै शिक्षकस्य भूमिका | २१ |

अन्वितिः-२

| | |
|--|-------|
| ३. भाषाशिक्षणसिद्धान्ताः | २५-३२ |
| भाषाशिक्षणसिद्धान्ताः शिक्षकाः छात्राश्च | २६ |
| संस्कृतभाषाशिक्षणस्य सामान्यसिद्धान्ताः | २६ |
| निश्चितोद्देश्यानां सिद्धान्तः | २६ |
| योजनायाः सिद्धान्तः | २६ |
| नमनीयतायाः अनुकूलतायाश्च सिद्धान्तः | २७ |
| पूर्वानुभवानाम् उपयोगस्य सिद्धान्तः | २७ |
| बालकेन्द्रिततायाः सिद्धान्तः | २७ |
| मनोरञ्जनस्य सिद्धान्तः | २७ |
| सक्रियसहभागितायाः सिद्धान्तः | २७ |
| समवायस्य सिद्धान्तः | २७ |
| उपचारात्मकशिक्षणस्य सिद्धान्तः | २७ |
| शिक्षणस्य मनोवैज्ञानिकसिद्धान्ताः | २८ |
| स्वाभाविकतायाः सिद्धान्तः | २८ |
| रुचिसिद्धान्तः | २८ |

| | |
|---------------------------------------|----|
| अभिप्रेरणासिद्धान्तः | २९ |
| अभ्यासस्य आवृत्तेः च सिद्धान्तः | २९ |
| क्रियाशीलतायाः सिद्धान्तः | २९ |
| मौखिककार्यसिद्धान्तः | ३० |
| वैयक्तिकभिन्नतायाः सिद्धान्तः | ३० |
| जीवनोपयोगितायाः सिद्धान्तः | ३१ |

४. शिक्षणसूत्राणि ३३-४१

| | |
|------------------------------------|----|
| शिक्षणसूत्राणि | ३५ |
| ज्ञातात् अज्ञातं प्रति | ३५ |
| सरलात् कठिनं प्रति | ३६ |
| मूर्तात् अमूर्तं प्रति | ३६ |
| वास्तविकतातः प्रतिरूपं प्रति | ३७ |
| पूर्णात् अंशं प्रति | ३७ |
| विश्लेषणात् संश्लेषणं प्रति | ३७ |
| विशिष्टात् सामान्यं प्रति | ३८ |
| अनिश्चितात् निश्चितं प्रति | ३८ |
| अनुभवात् तर्कं प्रति | ३८ |
| आगमनात् निगमनं प्रति | ३९ |

५. संस्कृतशिक्षणस्य उपागमाः, विधयः प्रविधयश्च ४२-८८

| | |
|---|----|
| उपागमः | ४२ |
| विधिः | ४३ |
| प्रविधिः | ४४ |
| उपागमानाम्, विधीनां प्रविधीनां च सम्बन्धः | ४४ |
| संस्कृतशिक्षणे उपागमाः | ४५ |
| सङ्ग्रन्थनः उपागमः | ४५ |

| | |
|------------------------------------|----|
| परिस्थितिजन्यः मौखिकः उपागमः | ४७ |
| सम्प्रेषणात्मकः उपागमः | ४९ |
| संरचनात्मकः उपागमः | ५१ |
| सहयोगात्मकः उपागमः | ५३ |
| संस्कृतशिक्षणविधयः | ५५ |
| परम्परागतविधिः | ५५ |
| व्याकरणानुवादविधिः | ५९ |
| पाठ्यपुस्तकविधिः | ६१ |
| व्याख्याविधिः | ६८ |
| प्रत्यक्षविधिः | ७२ |
| समाहारविधिः | ७७ |
| संस्कृतशिक्षणे प्रविधयः | ८० |
| सम्प्रत्ययचित्रम् | ८० |
| मौनम् | ८२ |
| मस्तिष्कविप्लवः | ८२ |
| पुनरावृत्तिः | ८२ |
| भूमिकानिर्वाहः | ८२ |
| वाक्यप्रयोगः | ८३ |
| भाषाक्रीडा | ८३ |
| उदाहरणम् | ८३ |
| भिन्नमेकं बहिष्करणीयम् | ८४ |

अन्वितिः-३

| | |
|---------------------------------|--------|
| ६. गद्यशिक्षणम् | ८९-१०४ |
| संस्कृते गद्यस्य प्रकाराः | ९० |
| संस्कृतगद्यस्य विशेषताः | ९० |

| | |
|--|----|
| विद्यालयपाठ्यक्रमे गद्यपाठाः | ९१ |
| विविधस्तरेषु गद्यशिक्षणस्य उद्देश्यानि | ९१ |
| गद्यशिक्षणविधयः | ९२ |
| पाठ्यपुस्तकविधिः | ९२ |
| व्याख्यानविधिः | ९३ |
| प्रश्नोत्तरविधिः | ९४ |
| अनुवादविधिः | ९५ |
| गद्यस्य शिक्षणसोपानानि | ९५ |

| | |
|--|----------------|
| ७. पद्यशिक्षणम् | १०५-१२६ |
| संस्कृतपद्यसाहित्यम् | १०६ |
| विविधस्तरेषु पद्यशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १०८ |
| पद्यशिक्षणविधयः | १०९ |
| परम्परागतविधिः | १०९ |
| अन्वयविधिः | १०९ |
| दण्डान्वयविधिः | ११० |
| खण्डान्वयविधिः | ११२ |
| गीत-नाट्यविधिः | ११५ |
| व्याख्याविधिः | ११७ |
| तुलनाविधिः | ११८ |
| टीकाविधिः | १२० |
| भाष्यविधिः व्यासविधिः वा | १२१ |
| अनुवादविधिः | १२२ |
| समीक्षाविधिः | १२२ |
| पद्यस्य शिक्षणसोपानानि | १२३ |

| | |
|---|---------|
| ८. व्याकरणशिक्षणम् | १२७-१५२ |
| व्याकरणशास्त्रस्य आचार्यपरम्परा | १२८ |
| पञ्चाङ्गं व्याकरणम् | १२८ |
| संस्कृतव्याकरणस्य जनप्रसारः | १२९ |
| व्याकरणस्य महत्त्वम् | १३० |
| व्याकरणशिक्षणस्य शास्त्रीयप्रयोजनानि | १३० |
| विविधस्तरेषु व्याकरणशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १३२ |
| सार्वभौमिकं व्याकरणम् | १३३ |
| प्रजनकव्याकरणम् | १३५ |
| कार्यात्मकं व्याकरणम् | १३७ |
| व्याकरणशिक्षणविधयः | १३९ |
| परम्परागतविधिः | १३९ |
| आगमननिगमनविधिः | १४० |
| ह्यूरिस्टिकविधिः | १४२ |
| परियोजनाविधिः | १४६ |
| व्याकरणशिक्षणस्य सोपानानि | १४९ |
| ९. कथाशिक्षणम् | १५३-१६२ |
| कथायाः प्रकाराः | १५४ |
| कथासाहित्यस्य वैशिष्ट्यम् | १५५ |
| विविधस्तरेषु कथाशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १५५ |
| कथाशिक्षणे प्रभाववर्धकाः उपायाः | १५६ |
| कथाशिक्षणस्य विधयः | १५७ |
| कथाशिक्षणे मूल्याङ्कनोपायाः | १५९ |
| कथाशिक्षणस्य सोपानानि | १६० |

| | |
|--|----------------|
| १०. नाटकशिक्षणम् | १६३-१७६ |
| नाट्यशास्त्रस्य पूर्वभूमिका | १६३ |
| भारतीयनाट्यशास्त्रस्य वैशिष्ट्यम् | १६४ |
| प्राच्यपाश्चात्यनाट्यचिन्तने भेदः | १६५ |
| रूपकाणां प्रकाराः | १६६ |
| अभिनयस्य प्रकाराः | १६७ |
| संस्कृतनाटकानां विकासपरम्परा | १६७ |
| साम्प्रतं नाटकविधायाः विकासः | १६८ |
| संस्कृतनाटकानां प्रभावोत्पादकता | १६९ |
| नाट्यस्य शास्त्रीयाणि उद्देश्यानि | १७० |
| विविधस्तरेषु नाटकशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १७० |
| नाटकशिक्षणविधयः | १७१ |
| नाटके प्रभाववर्धनाय उपायाः | १७३ |
| नाटकशिक्षणस्य सोपानानि | १७४ |
| ११. रचनाशिक्षणम् | १७७-१८६ |
| संस्कृतवाङ्मये रचना | १७८ |
| मौखिकरचनाशिक्षणम् | १७९ |
| मौखिकरचनाशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १७९ |
| मौखिकरचनागतिविधयः | १७९ |
| लिखितरचनाशिक्षणम् | १८० |
| विरामचिह्नानि | १८० |
| लिखितरचनाशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १८० |
| लिखितरचनागतिविधयः | १८१ |
| रचनाशिक्षणविधयः | १८२ |
| रचनाशिक्षणे प्रभाववर्धनार्थम् उपायाः | १८४ |
| रचनाशिक्षणस्य सोपानानि | १८५ |

| | |
|--|----------------|
| १२. अनुवादशिक्षणम् | १८७-२०४ |
| लिप्यन्तरणे समस्या: तत्समाधानञ्च | १८८ |
| अनुवादशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १८९ |
| संस्कृतभाषा अनुवादः च | १८९ |
| अनुवादस्य प्रकाराः | १९१ |
| अनुवादे समस्याः | १९४ |
| अनुवादगतसमस्यानां कारणानि | १९७ |
| भाषायाम् आधुनिकशब्दाः | १९९ |
| वैज्ञानिक-एवं-तकनीकशब्दावली आयोगः | १९९ |
| अनुवादशिक्षणविधयः | २०० |
| संस्कृतेन अनुवादे ध्यातव्यांशाः | २०१ |
| संस्कृतेन अनुवादे प्रभाववर्धकोपायाः | २०१ |
| अनुवादशिक्षणस्य सोपानानि | २०२ |
| १३. मूल्याङ्कनविधयः आदर्शप्रश्नपत्रनिर्माणञ्च | २०५-२२१ |
| मूल्याङ्कनस्य सम्प्रत्ययः | २०६ |
| संस्कृतवाङ्मये मूल्याङ्कनपरम्परा | २०६ |
| मूल्याङ्कनस्य पारम्परिकप्रविधयः | २०८ |
| मूल्याङ्कनस्य आधुनिकप्रविधयः | २१० |
| आदर्शप्रश्नपत्रस्य गुणाः | २१५ |
| नीलपत्राधारितम् आदर्शप्रश्नपत्रम् | २१८ |

अन्वितिः-४

| | |
|-----------------------------|----------------|
| १४. संस्कृतपाठयोजनाः | २२२-२३६ |
| पाठयोजनायाः परिभाषा | २२४ |
| पाठयोजनायाः महत्त्वम् | २२४ |
| पाठयोजनायाः गुणाः | २२५ |

| | |
|--|-----|
| पाठयोजनानिर्माणे ध्यातव्यांशाः | २२५ |
| कक्षायां पाठयोजनायाः क्रियान्वयने ध्यातव्यांशाः | २२७ |
| पाठयोजनायाः लाभाः | २२८ |
| पाठयोजनायाः विविधप्रारूपाणि | २२८ |
| हर्बर्टमहोदयस्य पञ्चपदात्मकपाठयोजना | २२८ |
| ब्लूममहोदयस्य मूल्याङ्कनपाठयोजना | २३० |
| मौरिसनमहोदयस्य एककपाठयोजना | २३१ |
| जॉन ड्यूयी किलपेट्रिक्-महोदययोः प्रायोजनात्मकपाठयोजना | २३२ |
| राष्ट्रीयशैक्षिकानुसन्धान-एवं-प्रशिक्षणपरिषदः पाठयोजना | २३३ |
| संस्कृतवाङ्मयस्य आलोके पाठयोजना | २३४ |

परिशिष्टम् (आदर्शसंस्कृतपाठयोजनाः)

| | |
|-----------------------------------|-----|
| आदर्शसंस्कृतगद्यपाठयोजना | २३७ |
| आदर्शसंस्कृतपद्यपाठयोजना | २४५ |
| आदर्शसंस्कृतव्याकरणपाठयोजना | २५३ |
| आदर्शसंस्कृतकथापाठयोजना | २६० |

अन्विति: - १

| | |
|-------------------------------------|-------|
| १. संस्कृतशिक्षणस्य उद्देश्यानि | १-१४ |
| २. संस्कृतशिक्षणस्य गुणवत्तावर्धनम् | १५-२३ |

जानाति वा?

“संस्कृतसाहित्यम् एकस्मिन् अर्थे राष्ट्रियम् अस्ति, किन्तु एतस्य उद्देश्यं सार्वभौमिकम् अस्ति। एतदेव कारणम् अस्ति यत् ये जनाः कस्याः अपि विशेषसंस्कृतेः अनुगामिनः न आसन्, तेषां ध्यानाकर्षणम् एतेन कृतम्।”

- डॉ. एम्. राधाकृष्णन्

“Sanskrit literature is national in one sense, but its purpose has been universal. That was why it commanded the attention of people who were not followers of a particular culture.”

-Dr. S. Radhakrishnan



- २०१० तमे ईस्वीयवर्षे उत्तराखण्डराज्ये २०१९ तमे ईस्वीयवर्षे च हिमाचलप्रदेशे संस्कृतभाषा द्वितीयभाषारूपेण समुद्घोषिता।
- १९९३ इति ईस्वीयवर्षात् इंग्लैण्डदेशस्य लण्डननगरे सेन्ट जेम्स विद्यालये अनिवार्यरूपेण संस्कृतं पाठ्यते। तत्रत्यः प्रधानाध्यापकः पॉल मॉस (Paul Moss) महोदयः एकस्मिन् साक्षात्कारे उक्तवान् यत् देवनागरीलिपिः संस्कृतभाषणं च बालकानाम् अङ्गुलीनां जिह्वायाश्च कठोरतां दूरीकर्तुं श्रेष्ठम् उपायद्वयम् अस्ति। अद्यत्वे भाषमाणानां यूरोपीयभाषाणां मौखिकप्रयोगे जिह्वायाः मुखस्य च लेखनप्रयोगे च अङ्गुलीनां सर्वेषां भागानां प्रयोगः न भवति। किन्तु संस्कृतम् आत्मनः ध्वन्यात्मकतायाः कारणेन मस्तिष्कसम्बद्धां निपुणतां विकसितां कर्तुम् अत्यन्तम् उपकरोति।

ग्रन्थ-ऋणम्

“इदानीं प्रधानप्रश्नः यः अस्ति भाषाशिक्षणम् उत विषयशिक्षणम् इति, तत्र अस्माकम् आशयः एवम् अस्ति - एतदुभयं भिन्नं भिन्नं न, उभौ अपि अंशौ अविभाज्यौ। भाषाशिक्षणं विना विषयशिक्षणं न शक्यम्। विषयशिक्षणं विना भाषाशिक्षणं नैव सम्भवेत्। किञ्चन एकं प्रधानम्, अपरं किञ्चन अप्रधानम् इत्यपि न भवेत्। उभे अपि शिक्षणे युगपत् भवेताम्। यथा वागर्थौ। तस्मात् तस्य प्रश्नस्य योग्यम् उत्तरं भवति ‘भाषया विषयस्य शिक्षणम्’ इति। तन्नाम संस्कृतेन संस्कृतविषयशिक्षणम् इति। ... केचन वदन्ति यत् संस्कृतमाध्यमं भवतु, परं प्रथमं माध्यमिकस्तरे प्रारभ्यतां येन छात्राणां सामर्थ्यं भवेत्, पश्चात् च विश्वविद्यालये इति। माध्यमिकस्तरस्य अध्यापकाः वदन्ति यत् उच्चकक्षयासु संस्कृतमाध्यमे समागते सति एव तत्र शिक्षिताः पश्चात् अध्यापकाः भूत्वा माध्यमिकस्तरे संस्कृतेन पाठयितुं शक्नुयुः इति। एवं स्थिते परिहारः कः? एकः एव मार्गः - उभयत्र अपि युगपत् आरब्धव्यम् इति। उभयत्र अपि छात्राणां कृते सेतुपाट्यक्रमः आरब्धव्यः, अध्यापकप्राध्यापकानां च प्रशिक्षणं करणीयं, नूतनपाट्यक्रमः, पाठ्यपुस्तकानि, मूल्याङ्कनविधयः च चिन्तनीयाः।

-शास्त्री, चमूकृष्णः (२००९); सावधानाः स्याम, देहली, संस्कृतभारती, पृ.सं. ७२-७३